SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

परंपरागत उद्यम व्यवस्था का ह्रास एवं पुर्नस्थापनाः कारण एवं चुनौतियाँ (शिवपुरी जिले की पिछोर तहसील के विशेष संदर्भ में)

अक्षय कुमार जैन, पीएच–डी., अर्थशास्त्र विभाग
शासकीय छत्रसाल महाविद्यालय, पिछोर, जिला–शिवपुरी, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
अक्षय कुमार जैन, पीएच–डी.
E-mail : akshay505jain@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 26/03/2025
Revised on : 26/05/2025
Accepted on : 05/06/2025
Overall Similarity : 01% on 28/05/2025

शोध सार

भारत गांवों में बसता है और भारतीय अर्थव्यवस्था मूल रूप से ग्रामीण अर्थव्यवस्था रही है जो उत्पादन और उपभोग दोनों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों पर निर्भर है। परंपरागत रूप से कृषि और पशुपालन के साथ–साथ कुटीर और लघु उद्यम भी ग्रामीण क्षेत्रों मे स्थित होकर उत्पादन से लेकर रोज़गार उपलब्ध कराने मे महती भूमिका निभाते रहे हैं। हम अपनी आवश्यकता की लगभग सभी वस्तुओं का निर्माण स्थानीय स्तर पर स्वयं करते थे और बेचकर लाभ कमाते थे। बेरोजगारी जैसी स्थिति उत्पन्न नहीं होती थी और सभी समानता का जीवन जीते थे। परंपरागत उद्यम व्यवस्था के छिन्न–भिन्न होने से न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक, पारिवारिक और राजनैतिक समस्याएँ उत्पन्न हो गईं हैं। ग्रामीण जनसंख्या का शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन हो रहा है और ग्रामीण उद्यमी जो कभी मालिक, शिल्पकार, कारीगर और रोजगार प्रदाता थे अब मजदूर और नौकर बन कर रह गए हैं। छोटी–छोटी चीजों के लिए भी दूसरों पर आश्रित हो गए हैं। अपनी कला और संस्कृति को खोते जा रहे हैं और अपने मूल उद्यम, मूल कार्य और मूल स्थान से विलग होते जा रहे हैं। आज जब भारतीय ज्ञान परंपरा को पुर्नस्थापित करने की दिशा मे हम आगे बढ़ रहे है तो हमें अपने परंपरागत उद्यमों की आधुनिकता के साथ पुर्नस्थापना करने पर भी कार्य करना होगा, यह कार्य हमारी कला और संस्कृति को संरक्षित करने में न केवल महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा बल्कि बेरोजगारी जैसी विकराल समस्या को दूर करने में प्रभावी साबित होगा। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य परंपरागत ग्रामीण उद्यम की भूतकाल और वर्तमान स्थिति का अध्ययन करते हुए परंपरागत उद्यमों के ह्रास होने के कारणों का पता लगाना और उनकी पुर्नस्थापना हेतु व्यवहारिक सुझाव देना है। यह शोध कार्य प्राथमिक व द्वितीयक समंकों पर आधारित हैं।

मुख्य शब्द

परंपरागत उद्यम, ग्रामीण बेरोजगारी, नई पीढ़ी, परंपरा, विकसित भारत, लोककला.

प्रस्तावना

परंपरागत रूप से विभिन्न कार्यों में संलग्न व्यक्तियों द्वारा अपने कौशल और ज्ञान का उपयोग करते हुए वस्तुओं और सेवाओं का निर्माण करना परंपरागत उद्यम कहलता है। परंपरागतता का अर्थ किसी जाति विशेष या विशेष कार्य से न होकर इसका संबंध किसी परिवार या समुदाय की कई पीढ़ियों द्वारा किया जाने वाला कार्य अथवा कार्य करने की विधि या तरीका है जिसमें कि उन्होने दक्षता, विशेषज्ञता और विशेषता प्राप्त कर ली है। उद्यम को अँग्रेजी मे Enterprise कहा जाता है। उद्यम का अर्थ होता है किसी वस्तु का उत्पादन करना / किसी सेवा को प्रदान करना और उसे जीवन यापन का साधन के रूप मे अपना लेना जो उनका प्राथमिक कार्य भी हो सकता है और गौण भी।

भारत अपने प्रारंभ काल से ही आत्मनिर्भरता की अवधारणा को आत्मसात करने वाला देश रहा है इसी को सत्य करती है हमारी परमपरगत उद्यम व्यवस्था। यह एक इस प्रकार की व्यवस्था होती है जिसमें कोई बड़ा गाँव अथवा छोटे–छोटे 5–10 गाँवों का समूह एक लघु अर्थव्यवस्था की भाँति व्यवहार करता है जिसमें प्रत्येक परिवार अपनी परंपरागत दक्षता का उपयोग करते हुए किसी वस्तु का निर्माण करता है अथवा कोई सेवा उपलब्ध कराता है और सभी एक दूसरे की वस्तुओं एवं सेवा का क्रय करते है। ऐसी व्यवस्था में न तो कोई बेरोजगार रहता है और न ही कोई गरीब किन्तु भारतीय इतिहास के मध्यकाल और आधुनिक काल में विदेशी वस्तुओं का बड़ी मात्रा मे आयात और कल–कारखानों की स्थापना ने स्थानीय परंपरागत उद्यमियों के समक्ष अनेक बाधाएं खड़ी कर दी जिससे ग्रामीण आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था को गहरा झटका लगा। गाँवों में बेरोजगारी में वृद्धि हुई फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की और प्रवजन होने लगा जिसने न केवल मालिकों को मजदूर बना दिया बल्कि परंपरागत उद्यमों को भी छिन्न–भिन्न कर दिया। परंपरागत उद्यमों के ह्रास ने एक ओर बेरोजगारी, गरीबी, आपसी वैमनस्यता को जन्म दिया है, वहीं दूसरी ओर शहरी क्षेत्रों मे जनसंख्या की अधिकता, गंदी बस्तियों का उदय, अपराध, अनैतिक कार्य सहित अनेक समस्याओं का जन्म हुआ है। आयातित वस्तुओं के अधिक उपभोग से विदेशों पर हमारी निर्भरता बड़ी है और विदेशी मुद्रा भंडार को उन वस्तुओं के आयात पर खर्च करना पड़ रहा है जिन्हें देश में निर्मित किया जा सकता है। अब जब हम विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की और बढ़ रहे हैं तो हमें पुनः अपनी परंपरागत उद्यम व्यवस्था को नवीन तकनीकी को शामिल करते हुए पुनःस्थापित करने की आवश्यकता है। यह शोध कार्य इसी दिशा मे एक प्रयास है।

साहित्य पुनरावलोकन

(Gupta, 2019) **ओमदीप गुप्ता** द्वारा किए गए "Traditional Rural Industry Today" अध्ययन में उन्होने पाया कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों मे पर्याप्त असमानता देखने को मिलती है कि ग्रामीण क्षेत्र कृषि पर केन्द्रित है वहीं शहरी क्षेत्रों मे औद्योगीकरण अधिक है जिसके कारण प्रतिव्यक्ति आय मे अंतर सहित कई असमानताएँ हैं साथ ही यह जीडीपी में भी कमी का कारण है। गुप्ता ने आपने अध्ययन मे ग्रामोद्योग और कुटीर उद्योग का अध्ययन करते हुए ग्रामीण औद्योगीकरण की आवश्यकता को भी रेखांकित किया है। अध्ययन मे पाया गया है की परंपरागत उद्यम धारणीय विकास को प्रोत्साहित करते हैं तथा यह ग्रामीणों को स्थायी रोजगार उपलब्ध कराने में सक्षम हैं इन उद्यमों में परंपरागत विधि से उत्पादन होने के कारण श्रमिक का ना तो अधिक पढ़ा लिखा होना आवश्यक है और ना ही कार्य का विशेषज्ञ होना।

(Ahlawat, 2024) **अहलावत** ने ग्रामोद्योग को पुनर्जीवित कैसे करें? इसका अध्ययन किया है। अध्ययन बताता है कि ग्रामोद्योग की क्षमता असाधारण है। ये उद्यम स्थानीय अर्थव्यवस्था के आधार हैं और उत्पादन प्रविधि के आधार पर इसमें धरणीय विकास की अनंत संभावनाएं हैं। यद्यपि तेजी से होते औद्योगीकरण, वैश्वीकरण, बड़े पैमाने के

उत्पादन (Mass Production) और प्रतिस्पर्धा ने ग्रामोद्योगों को काफी क्षति पहुंचाई हैं। SDG के लक्ष्यों को पाने के लिए ग्रामोद्योगों को पुनर्जीवित करना होगा इस हेतु कारीगरों और समुदायों को प्रशिक्षित करना होगा, स्थानीय कौशल का आर्थिक समावेशन तथा उद्यम मालिकों का सहयोग करना होगा।

(B. Rajendra, 2019) अपने शोध पत्र "Role ofArtisans in the Economic Development of the Country:AnAnalysis" के अंतर्गत भारत की सभी पंचवर्षीय योजनाओं का अध्ययन ग्रामीण कारीगरों के संदर्भ मे किया और पाया कि ग्रामीण कारीगरों की आर्थिक दशा काफी कमजोर है और इसके पीछे मुख्य कारण है (LPG) उदारीकरण (Liberalization), निजीकरण (Privatization) एवं वैश्वीकरण (Globalization), LPG ने ग्रामीण कारीगरों की स्थिति को बद से बदतर कर दिया है, क्योंकि बाज़ार में उनके द्वारा उत्पादित की जाने वाली वस्तुओं की हू–बहू वस्तुओं की भरमार है; जो सस्ती भी हैं। उन्होने इस संबंध में टसर सिल्क का भी अध्ययन किया और पाया कि चाइना से आने वाली यह साड़ी भारत में बनने वाली सिल्क साड़ी से काफी सस्ती है और इसने भारतीय कारीगरों और उनके उत्पादों को बड़ी क्षति पहुंचाई हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध कार्य के उद्देश्य निम्न हैं:

1. शिवपुरी जिले के परंपरागत उद्यमों और उनके द्वारा उत्पादित उत्पादों का पता लगाना।
2. परंपरागत उद्यमों का निरंतर ह्रास होने के कारणों को खोजना।
3. परंपरागत उद्यमों का आर्थिक स्थिति, रोजगार एवं अन्य पर पड़ने वाले प्रभावों को खोजना।
4. परंपरागत उद्यमों को पुनर्स्थापित करने हेतु व्यावहारिक सुझाव देना।

शोध क्षेत्र

मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले की पिछोर तहसील को शोध क्षेत्र के रूप में लिया गया है। 2011 की जनगणना के अनुसार शिवपुरी जिले की कुल जनसंख्या 17.26 लाख हैं जिसमे से 14.3 लाख अर्थात् 83 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र मे निवास करती है। यहाँ साक्षारता दर 62.55 प्रतिशत है। पुरुषो की 74.52 प्रतिशत तथा महिलाओं की 48.79 प्रतिशत है। शिवपुरी जिले मे पाँच अनुविभाग शिवपुरी, पोहरी, कोलारस, करेरा और पिछोर हैं। जिले मे कुल 11 तहसील हैं जिनमे से पिछोर तहसील में यह शोध कार्य किया गया है। इस तहसील के अंतर्गत कुल 75 ग्राम पंचायतों के अंतर्गत 172 गाँव है तथा एक मात्र नगर परिषद पिछोर है। तहसील की कुल जनसंख्या 259685 हैं जिसमे से 93 प्रतिशत अर्थात 241558 ग्रामीण क्षेत्र मे निवासरत है यहाँ का लिंगानुपात 881:1000 है।

शोध प्रविधि

यह शोध कार्य विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकार का है जो प्राथमिक समंकों पर आधारित है जिन्हें प्रश्नावली के माध्यम से एकत्रित किया गया है। प्राथमिक समंक प्राप्त करने हेतु परंपरागत उद्यम उपलब्धता वाले गांवों में दो समूहों से जानकारी प्राप्त की गई है; प्रथम समूह में परंपरागत उद्यम में कार्यरत हैं अथवा पूर्व में रहे है कुल 70 कारीगरों/परिवार के मुखिया से जानकारी प्राप्त की गई है; द्वितीय समूह में 120 उपभोक्ताओं का चयन यादृछिक रूप से किया गया है जिसकी जानकारी तालिका क्रमांक 02 में प्रदर्शित है। विस्तृत एवं गहन अध्ययन हेतु विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं के प्रकाशन, समाचार पत्र, शोध पत्रिकाओं, विश्वसनीय वेबसाइट का अध्ययन किया गया है। प्राप्त जानकारी को व्यवस्थित कर निष्कर्षण किया गया है।

तालिका क्रमांक 01: अध्ययन हेतु निदर्शन परंपरागत उद्यम मे कार्यरत हैं अथवा कार्यरत रहे परिवारों की जानकारी

उद्यम का प्रकार	परिवारों की संख्या	प्रतिशत
मिट्टी संबंधी उद्यम	12	17.14
लोहे संबंधी उद्यम	10	14.29
लकड़ी संबंधी उद्यम	11	15.71
कपड़ा संबंधी उद्यम	2	2.86
कृषि संबंधी उद्यम	15	21.43
वनोत्पाद संबंधी उद्यम	7	10.00
पत्थर संबंधी उद्यम	5	7.14
कागज़ संबंधी उद्यम	3	4.29
चमड़ा संबंधी उद्यम	1	1.43
सोना चाँदी संबंधी उद्यम	4	5.71
योग	70	100.00

(स्रोतः प्राथमिक समंक)

तालिका क्रमांक 02: अध्ययन हेतु निदर्शन उपभोक्ता सदस्यों की जानकारी

उम्र	उपभोक्ताओं की संख्या	प्रतिशत
70 वर्ष और अधिक	23	19.17
50–69	41	34.17
30–49	36	30.00
0–29	20	16.67
योग	120	100.00

(स्रोतः प्राथमिक समंक)

शोध कार्य की सीमाएं

1. यह अध्ययन एक सीमित क्षेत्र सिर्फ एक तहसील को अध्ययन क्षेत्र के रूप में लेकर किया गया है।
2. यह अध्ययन कम अवधि सिर्फ 1 माह में पूर्ण किया गया है।
3. इसमें सामान्य सांख्यिकी विधियों का उपयोग किया गया है।

शोध कार्य की उपादेयता

यह शोध कार्य भारत के ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी कहे जाने वाले परंपरागत उद्यम व्यवस्था जो ग्रामीण क्षेत्र को आत्मनिर्भर, आर्थिक रूप से सशक्त, सामाजिक रूप से मजबूत, वैचारिक रूप से समान और मानवीय रूप से समानता लाने वाली का है। पिछले कुछ इसमे दशकों से निरंतर ह्रास हुआ है जिससे अनेक समस्याओं ने जन्म लिया है। यह शोध कार्य आगे शोध की दिशा को निर्धारित करने में प्रभावी साबित होगा तथा इस क्षेत्र में शोध करने वालों के लिए आधारभूत जानकारी उपलब्ध कराने के साथ शोध विषय निर्धारण मे सहायक सिद्ध होगा।

परंपरागत ग्रामीण उद्यम

1. **कृषि उत्पाद पर आधारित उद्यमः** ग्रामीण भारत में लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि है। व्यक्ति अपने जीवन यापन हेतु कृषि उत्पादन करते हैं जिसे अर्थव्यवस्था में प्राथमिक क्षेत्र के अंतर्गत रखा जाता है। कृषि पदार्थों का रूप बदलकर नए उत्पाद बनाने वाले उद्यम कृषि आधारित उद्यम कहलाते हैं जिसके अंतर्गत सरसों,

मूँगफली, अरंडी, गुली (महुआ का फल), नीम की नीबोरी का तेल निकालना, गन्ने से गुड बनाना, दूध से मावा, दही, मट्ठा, घी बनाना, मसाले बनाना, फल पकाकर बेचना, मूँगफली के दाने बनाना, चने एवं मूँगफली का होरा (सेकना) करना, चने एवं पालक की भाजी सुखाना, सत्तू बनाना, पटसन से रस्सी एवं बोरी बनाना, काँस से मकान पोतने की कूची (इतनी), आम के पत्तों के बंदनवार, छेयोला (टेसू) के पत्तों से दोना–पत्तल बनाना, बेर से मिर्चन एवं लबादा, ताड़ से झाड़ू बनाना, आचार, बड़ी, पापड़ आदि बनाना।

2. **लकड़ी आधारित उद्यमः** लकड़ी से खटिया, मेज, कुर्सी, बेंच, तखत, पलंग, अलमारी, खिलौने, तराजू, पढ़ने की पट्टी, बेंत, बल्ली, गुल्ली–डंडा, बेट, खूँटी, दरवाजे, विवाह के मंडप, खंभ, खड़ाऊ, पिडी, सजावटी समान, पेटी, गाड़ी, हल, कारीगरी के औज़ार, मूर्तियाँ, डिबिया, वर्तन, सीढ़ी, दर्पण एवं फोटो फ्रेम, कलमदान, फूलदान, डलियाँ, सूप, बीजना, सीटी, बांसुरी, ढोलक, तबला, मंदिर, पटा बेलना, छलनी, पैकिंग सामग्री आदि बनाना।

3. **धातु उद्यम**

   लोहाः लोहे से निर्मित खेती में प्रयुक्त होने वाले फार, रहँट, फाबड़ा, गेंती, कुदरा, हसिया, सुरया, सब्बल, हल, बैल गाड़ी के धवा, गुल्ला, घन, हथोड़ा, कुल्हाड़ी, बघिया, कीलें, पिंजरे, सुनारी, लुहारी, कुम्हारी आदि में प्रयुक्त होने वाले औज़ार, घरों मे प्रयुक्त होने वाले सामान जैसे बाल्टी, वर्तन, दरवाजे, खिड़की, टंकी, पेटी, जाली, कांटा, ज़ंजीर, टीनशेड, पलंग, डिब्बे आदि।

   तांबाः बर्तन, ज़ंजीर, सजावटी सामान आदि।

   पीतलः बर्तन, सजावटी सामान, दिखावटी गहने आदि।

   सोना–चाँदीः आभूषण, वर्तन, सजावटी सामान आदि।

4. **कपड़ा उद्यमः** मोटा कपड़ा, दरी, चादर, पांवपोश, पहनने के कपड़े, रज़ाई गद्दा, गाड़ी के पाल, जाजम, फर्श, कनात, चाँदनी, झोला–थैला, सामान रखने की पोटली, पर्दे, गुड्डे–गुड़ियाँ, खिलौने आदि।

5. **पत्थर उद्यमः** चकिया, जतला, उरसा, सिल, ख्ल्लर (खरल), लुडिया, मूर्तियाँ, कठोता, परांत, मंदिर, गमले, टंकी, खिलौने आदि।

6. **मिट्टी उद्यमः** घडा, तवा, दीपक, गुल्लक, मूर्ति, सजावटी सामान, सुराही, बर्तन, कुल्लहड़, खिलौने, ईंट, गमले, फूलदान, कलमदान, स्याहीदान, चिलम, हुक्का, खपरा (कवेलु), डहार (अनाज रखने हेतु), सीटी, मोहर, पूजापाठ हेतु सामग्री आदि

7. **कागज उद्यमः** पतंगें, खिलौने, राखियाँ, कॉपी, वही–खाता, सजावटी सामान, ताव, पेपर मेसी के सामान, लिफाफे आदि

8. **वनोत्पादः** दोना–पत्तल, बंदनबार, रंग, पूजा–पाठ की सामग्री, कलात्मक प्राकृतिक सामान, विभिन्न प्रकार के फल, फूल, कंदमूल, गोंद, जड़ीबूटियाँ, बीड़ी निर्माण, विभिन्न प्रकार के चटनी–चूरन, इमारती एवं जलाऊ लकड़ियाँ, किरे आदि।

9. **चमड़ा उद्यमः** जूते–चप्पल, वर्तन, थैला, कपड़े आदि

10. **रंगाई–कढ़ाई उद्यमः** कपड़े रंगना, कपड़ों पर कढ़ाई करना आदि

परंपरागत उद्यमों के ह्रास होने के कारण

पिछले कुछ दशकों से भारतीय संस्कृति, भाषा, लोकाचार, गायन, वादन, नृत्य, कृषि पद्यती एवं ग्रामीण उद्यम व्यवस्था मे निरंतर ह्रास देखने को मिल रहा है। इसके पीछे कई उत्तरदाई कारण हो सकते हैं जिनका अध्ययन यहाँ दो शीर्षकों के अंतर्गत किया गया है प्रथम माँग पक्ष में कमी के कारण और द्वितीय पूर्ति पक्ष में कमी के कारण जो निम्न हैं:

मांग पक्ष

परंपरागत उद्यम का ह्रास होने के प्रमुख कारणों मे से एक कारण है कि इनके द्वारा उत्पादित वस्तु कि मांग

में कमी हो जाना। प्रस्तुत अध्ययन मे मांग पक्ष की कमी के कारणों को जानने के लिए अध्ययन क्षेत्र से कुल 120 उपभोक्ताओं का चयन कर जानकारी प्राप्त की गई तथा प्राप्त तथ्यों को निम्न तालिका मे व्यवस्थित किया गया है:

तालिका क्रमांक 03: परंपरागत उद्यमों द्वारा उत्पादित वस्तुओं की मांग घटने के कारण

कारण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
परंपरागत उद्यमों की वस्तुओं का आधुनिक एवं आकर्षक ना होना	26	21.67
परंपरागत उद्यमों की वस्तुओं का महंगा होना/ आयातित या कारखानों में उत्पादित वस्तुएँ सस्ती और आकर्षक होना	30	25.00
वस्तु की उपलब्धता ना होना /वस्तु विक्रय का निश्चित बाज़ार या स्थान ना होना	4	3.33
सोशल मीडिया का प्रभाव होना	3	2.50
लोगों का शिक्षा प्राप्त करना /परिवहन के साधनों का ग्रामीण क्षेत्रों मे पहुंचना	5	4.17
नई पीढ़ी की परंपरागत वस्तुओं मे रुचि ना होना	20	16.67
संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवार होना	8	6.67
Ready to Use सामाग्री का बाज़ार में उपलब्ध होना /परंपरागत वस्तु के स्थानापन्न उपलब्ध होना	12	10.00
सामाजिक संबंधो का कमजोर होना	8	6.67
ऑनलाइन शॉपिंग प्लैटफ़ार्म पर परंपरागत वस्तुएँ उपलब्ध न होना	4	3.33
योग	120	100.00

(स्रोतः प्राथमिक समंक)

उपरोक्त तालिका मे परंपरागत उद्यमों से उत्पादित होने वाली वस्तुओं की वर्तमान में मांग कम होने के कारणों को दर्शाया गया है जो अध्ययन के दौरान उपभोक्ताओं से पूंछे गए हैं। सर्वाधिक 25 प्रतिशत उपभोक्ता मानते हैं कि बाज़ार मे उपलब्ध कारखानों मे उत्पादित अथवा आयतित वस्तुएँ परंपरागत उद्यमों द्वारा उत्पादित वस्तुओं कि तुलना में सस्ती हैं वहीं 22 प्रतिशत उपभोक्ता मानते हैं कि परंपरागत उद्यमों द्वारा उत्पादित वस्तुएँ न तो आधुनिक हैं और ना ही आकर्षक। 17 प्रतिशत उपभोक्ताओं का कहना है कि नई पीढ़ी की रुचि परंपरागत उद्यमों से उत्पादित वस्तुओं में नहीं है और वे आधुनिक वस्तुएँ खरीदना पसंद करते हैं, 10 प्रतिशत उपभोक्ताओं का कहना है कि बाज़ार मे बहुत सी वस्तुएँ उपलब्ध हैं जो परंपरागत वस्तुओं के स्थानापन्न है इसीलिए परंपरागत उद्यम की बस्तुओं के स्थान पर उन्हे आसानी से खरीदा जा सकता है। सामाजिक एवं पारिवारिक संस्था के स्वरूप मे आ रहे बदलाव भी अहम कारक है। संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवार होने से पूजा पाठ, तीज त्योहार, शुभ कार्यो आदि में उपयोग की जाने वाली सामाग्री की मांग घटी है, क्योंकि अब ऐसे कार्य एकल परिवारों में सामान्यता कम सम्पन्न हो रहे हैं। ठीक इसी प्रकार अब लोगों की एक दूसरे पर निर्भरता घटी है सभी अपनी–अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने मे सक्षम पाते है इसीलिए सामान खरीदते समय सामाजिक सम्बन्धों के स्थान पर वस्तु के मूल्य और आसानी से उपलब्धता के आधार पर बाज़ार से वस्तु को खरीद लिया जाता है। सोशल मीडिया प्लेटफ़ोर्म जिससे लोग प्रभावित होते हैं और आधुनिक दिखना चाहते हैं इससे भी परंपरागत उद्यमों के सामान की मांग मे कमी आई है। इसके अलावा परिवहन, शिक्षा एवं संचार के साधनो की गाँव तक पहुँच तथा परंपरागत उद्यमों द्वारा उत्पादित वस्तुओं की बिक्री का कोई निश्चित स्थान या बाज़ार नहीं होना भी इनकी मांग कम होने का एक कारण के रूप में सामने आया है।

पूर्ति पक्ष

परंपरागत उद्यमों का ह्रास होने के पीछे इनकी पूर्ति भी एक प्रमुख कारण है। पूर्ति पक्ष के कारणों को जानने के लिए परंपरागत उद्यम को संचालित करने वाले परिवारों जिनकी संख्या 70 है से संपर्क कर पूर्ति पक्ष की समस्याओं

के बारे में जानकारी प्राप्त की गई जिसे निम्न सारणी में दर्शाया गया है:

तालिका क्रमांक 04: परंपरागत उद्यमों द्वारा उत्पादित वस्तुओं की पूर्ति कम होने के कारण

कारण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
नई पीढ़ी की परंपरा मे रुचि ना होना /नौकरी करने की ओर रुझान होना / नई पीढ़ी का शहरों की और आकर्षण होना	18	25.71
वस्तु की मांग कम होना	4	5.71
कच्ची सामाग्री की आसानी से उप्लब्धता ना होना	6	8.57
निर्माण विधि धीमी होना /वस्तु के निर्माण मे अधिक मेहनत होना	6	8.57
वस्तु का विक्रय मूल्य कम होना /आय कम होना/स्याउडी प्रथा होना	15	21.43
भंडारण स्थान ना होना/वर्ष भर उत्पादन करने के लिए बारहमासी स्थान ना होना	6	8.57
सरकार द्वारा ध्यान ना देना /आर्थिक सहायता या विक्रय सहायता ना मिलना	9	12.86
परंपरागत कार्य करने से सामाजिक प्रतिष्ठा कम होना	6	8.57
योग	70	100.00

(स्रोतः प्राथमिक समंक)

परंपरागत उद्यम के ह्रास के पूर्ति पक्ष के कारणों मे 26 प्रतिशत मानते है कि सर्व प्रमुख कारण है कि नई पीढ़ी की अपनी परंपरा मे कोई रुचि नहीं हैं, उनमें शहरों और नौकरी के प्रति आकर्षण है, उनके अंदर जोखिम सहने और प्रबंधन की क्षमता का अभाव है और वे एक निश्चित राशि जो वेतन के रूप में प्राप्त होती है से संतुष्ट हैं। दूसरा प्रमुख कारण है जिसे 21 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना है कि वस्तु का विक्रय मूल्य कम होना है जिससे इन परिवारों की आय कम होती है, साथ ही अभी भी कुछ ग्रामीण क्षेत्रों मे स्याउडी प्रथा है जिसमें उत्पादकों को वस्तु के नगद मूल्य के स्थान पर फसल आने पर उत्पादन का एक हिस्सा प्राप्त होता है। 13 प्रतिशत लोग मानते हैं कि सरकार द्वारा परंपरागत उद्यमों की कोई सहायता नहीं करने एवं योजनाओं के सही रूप से लागू नहीं होने के कारण यह उद्यम बंद होने की कगार पर हैं। 9 प्रतिशत व्यक्ति मानते है कि कच्ची सामग्री पूर्व कि भांति उपलब्ध नहीं हैं। 9 प्रतिशत मानते है कि इन उद्यमों मे वस्तु के निर्माण मे बहुत अधिक समय और मेहनत लगती है जिसे लोग करना पसंद नहीं करते हैं। 9 प्रतिशत लोग मानते है कि प्रगतिशील समाज कि दृष्टि से परंपरागत काम करने से सामाजिक प्रतिष्ठा कम होती है इसीलिए लोगों ने परंपरागत कार्य करना बंद कर दिया हैं वहीं 6 प्रतिशत लोगों का कहना है कि इन वस्तुओं की मांग कम होने से इनकी पूर्ति मे कमी आई है।

उपरोक्त विश्लेषण मे कुछ महत्वपूर्ण तत्व प्रकाश में आए है

- **आधुनिकता:** यह एक प्रमुख कारण है जिसको अपनाने पर व्यक्ति दूसरों से प्रभावित होकर अपने परंपरागत आचार विचार से दूर होता है और स्वयं को प्रगतिशील सिद्ध करने के लिए आधुनिकता की ओर भागता है। यह तथ्य मांग और पूर्ति पक्ष दोनों ओर देखने में आया है कि उपभोक्ता आधुनिक, आयातित और कारखानों मे निर्मित सुंदर दिखने वाली वस्तुओं को खरीदना पसंद कर रहा है, वहीं परंपरागत रूप से उत्पादन करने वाले परिवारों की वर्तमान पीढ़ी अपने परंपरागत व्यवसाय से दूर होकर शहरों मे नौकरी करना पसंद कर रही है। फलस्वरूप परंपरागत उद्यम धीरे–धीरे लुप्त हो रहे हैं और हुनर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित नहीं हो पा रहा है।
- **वस्तु की लागत एवं कीमत:** वाणिज्य एवं व्यापार का आधार लाभ होता है जो उद्यमी को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। अध्ययन में यह तथ्य सामने आया है कि परंपरागत विधि एवं तकनीकी से उत्पादन करने पर समय अधिक लगता है जिससे श्रम लागत बढ़ती है जो वस्तु के मूल्य को बढाती है। इस बढ़े हुए मूल्य पर भी उत्पादक को अधिक लाभ नहीं होता वहीं दूसरी ओर यही मूल्य उपभोक्ता को महंगा लगता है

जिससे वह परंपरागत उद्यम की वस्तु के स्थान पर कारखानों मे निर्मित सस्ती वस्तु को खरीदना चाहता है।

- **सामाजिक मूल्यों में विचलनः** अध्ययन के दौरान यह तथ्य सामने आया है कि संचार और परिवहन के साधन, शिक्षा, इंटरनेट एवं सोशल मीडिया कुछ ऐसे विकासशील परिवर्तन है जिनसे सामाजिक मूल्यों के प्रति विचलन हुआ है। यह विचलन सकारात्मक है अथवा नकारात्मक इसका निर्धारण दार्शनिक और नैतिक गुणों के विशेषज्ञ ही निर्धारित कर सकते है किन्तु यहाँ यह निश्चित रूप से प्रतिपादित होता है कि सामाजिक मूल्यों मे विचलन होने से परंपरागत उद्यमों का ह्रास हुआ है।

निष्कर्ष

संपन्नता, सामाजिक–आर्थिक समानता और स्वावलंबन प्राप्त करना किसी भी परिवार, समाज और राष्ट्र का लक्ष्य होता है और इसे प्राप्त करने के लिए हमें हमारे पास उपलब्ध ज्ञान, कौशल, संसाधन और प्रज्ज्वलित ज्ञान केन्द्रों का कुशलता, आधुनिकता और तकनीकि से कुशल समन्वय करते हुए परंपरागत उद्यमों की पुर्नस्थापना की और कदम पूरी योजना के साथ बढ़ाना होगा जिसमें शासन, उत्पादकों और उपभोक्ताओं की महत्वपूर्ण भूमिका होगी कि वे परंपरागत वस्तुओं को आधुनिकता के साथ उत्पादित और उपभोग करने की दिशा मे पूर्ण निष्ठा के साथ आगे बढ़ें। वृहद पैमाने के उद्यम आज के समय की आवश्यकता है, किन्तु परंपरागत उद्यम पुनर्स्थापित करने लिए पर्याप्त कारण और अवसर उपलब्ध हैं। हम आशा करते हैं शीघ्र ही परंपरागत उद्यम अर्थव्यवस्था में अपना प्रभावी स्थान पुनः स्थापित कर लेंगे जो विसकित भारत 2047 के लक्ष्य प्राप्ति की ओर एक अहम कदम होगा।

सुझाव

परंपरागत उद्यमों की पुनर्स्थापना हेतु व्यावहारिक सुझाव निम्न हैं:

1. विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत परंपरागत उद्यमों की पुर्नस्थापना की दिशा मे कार्य करते हुए इन उद्यमों द्वारा उत्पादित वस्तुओं को व्यवहार और व्यापार की मुख्यधारा में लाने हेतु विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना चाहिए।
2. NEP 2020 के प्रावधान एक विस्तृत आकाश है जिसमें प्रत्येक क्षेत्र मे बहुत कुछ किया जा सकता है तो छात्रों को नैतिक शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से रोजगार के अवसर हेतु परंपरागत उद्यम को आधुनिक तकनीकि का प्रयोग करते हुए स्थापित करने के लिए प्रेरित और मार्गदर्शित करना चाहिए।
3. शासन स्तर पर इन उद्यमों हेतु लागू की गई योजनाओं की समीक्षा क्षेत्र मे जाकर करनी चाहिए तथा कमियों और अशानुरूप सफलता न मिलने के कारणों को जाँचकर पुनः फ्लेगशिप कार्यक्रम के अंतर्गत गहनता से लागू करने की आवश्यकता है। इसके लिए गैर सरकारी संस्थायों (एनजीओ) की मदद ली जा सकती है।
4. परंपरागत उद्यमों को लाभ का व्यवसाय बनाने के लिए तकनीकि संस्थाओं को इस दिशा मे काम करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए कि इन उद्यमों से उत्पादित वस्तुओं की लागत कम हो जाए, समय और श्रम की भी बचत हो, वस्तु आकर्षक हो किन्तु उसकी मूल विशेषताएँ प्रभावित न हों।
5. नौकरियाँ उपलब्ध करने से बेरोजगारी का पूर्ण हल नहीं निकाला जा सकता है इसलिए शैक्षणिक संस्थाओं मे रोजगार मेले के स्थान पर स्वरोजगार मेलों का आयोजन किया जाना चाहिए जिसमे क्षेत्रानुसार परंपरागत उद्यमों की स्थापना की दिशा में कार्य हो।
6. परंपरागत उद्यमों कि पुर्नस्थापना के प्रारम्भिक चरण में इन उद्यमों द्वारा उत्पादित वस्तुओं के विपणन में शासन को एनजीओ एवं अन्य गैरलाभकारी सामाजिक संस्थायों के माध्यम से सहायता करना चाहिए।
7. लोगों को स्वयं जागरूक होना चाहिए कि आधुनिकता सिर्फ आयातित वस्तुओं मे नहीं होती बल्कि अपने आस–पास उत्पादित होने वाली वस्तुओं में भी होती है जो न केवल पर्यावरण के धारणीय विकास के लक्ष्य को पूरा करती है, बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन–यापन के प्रभावी साधन उपलब्ध करातीं हैं और हमारे पूर्वजों के वैभव को भी गर्वित करतीं है।

संदर्भ सूची

1. Ahlawat, K. (2024) How can Revitalizing Traditional HandicraftAnd Cottage Industries in Rural India Contribute to Sustainable Economic GrowthAnd Employment Generation in the 21st century, *Journal of BusinessAnd Management,* 26 (11), 22-31.
2. B. Rajendra, P. G. (2019) Role of theArtisans in the Economic Development of the country:AnAnalysis, *Internationa Journal of Scientific Research,* 8 (7), 20-22.
3. Gupta, O. (2019) Traditional Rural Industry Today, *International Journal of Management,* 10 (6), 794-803.
4. Panwar, Mukesh Kumar; Gupta, V.K. (2022) Role of Skill Development Initiatives to Empower Rural Youth in Rajasthan, *International Journal for Research TendsAnd Innovation,* 7 (8), 1911-1922, ISSN 2456-3315
5. Srija, A; Ara, Shamim (2019) SkillAnd Entrepreneurship Development for Rural India, *Kurukshetra,* Aug-2019 Pg 56-60.
6. Bhattacharyya, Dhritiman (2014) Cottage Industry Clusters in India in Improving rural livelihood:An Overview, *International Journal of Humanities &Social Science Studies,* July 2014, I(I), 59-64, ISSN2349-6959.
7. Kumar, J. Suresh; Shobana, D. (2023) A Study of Impact of Skill India on Rural Youth of North East India, *International Journal for Multidisciplinary Research,* July-August 2023, 5(4), 1-9, E ISSN 2582-2160
8. Shah, Amisha; Patel, Rajiv (2019) Suggestive Measures to Empower the Heirs of Handicrafts, *Voice of Research,* Dec 2019, 8(3), 36-43, ISSN 2277-7733
9. Rural Entrepreneurship (UNIT 12), chrome-extension://efaidnbmnnnibpcajpcglclefindmkaj /https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/95316/1/Unit-12.pdf, Accessed on 08/03/25At 9:13am
10. https://www.census2011.co.in/census/district/290-shivpuri.html, Accessed on 24/03/2025.
11. https://highereducation.mp.gov.in/, Accessed on 22/03/2025.
12. https://jiwaji.edu/, Accessed on 21/03/2025.
13. https://rural.gov.in/en, Accessed on 23/03/2025.
14. https://dge.gov.in/dge/schemes_programmes, Accessed on 24/03/2025.

****